https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 01, Jan 2026, JAN. 2026, PP 01-04 (Total PP 04)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly

PAINTINGS OF JUNA MAHAL, DUNGARPUR: A UNIQUE CONFLUENCE OF ADORNMENT, BEAUTY AND PHILOSOPHY (**जूना महल, डूंगरपुर की चित्रकला: श्रृंगार, सौंदर्य और दर्शन का अद्वितीय संगम**)

Dr. Laxman Lal Sargada[a]* **Kratika Kansara**[b]

[a] *Research Supervisor, Associate Professor, Painting, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)*

[b] *Research Scholar, Research Scholar, Department of Visual Arts, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)*

[a] *Email: laxmanart31@gmail.com*

Abstract

The paintings of Juna Mahal in Dungarpur are a unique example of Rajasthan's rich cultural heritage, artistic excellence, and philosophical depth. This palace is not merely a historical structure but a living art gallery, where the murals on its walls vividly portray the life, emotions, and aesthetic sensibilities of the past.Inside the palace, a wide variety of paintings can be found, including religious narratives, scenes of royal life, hunting depictions, and representations of nature. Among these, the *shringara*-themed (romantic and aesthetic) paintings are especially noteworthy. Located on the fifth floor, these artworks present a subtle, balanced, and dignified expression of relationships between men and women. They depict love not merely as physical attraction but as a blend of emotional depth, intimacy, and beauty. Their inspiration is rooted in the Indian philosophical concept of *Kama*, which holds an important place among the four *Purusharthas* (goals of life).

From an artistic perspective, the lines in these paintings are extremely delicate, fluid, and lively. The artworks are divided into small panels, where each panel presents an independent scene, yet together they form a cohesive narrative. The backgrounds—featuring palace architecture, *jharokhas* (ornate windows), curtains, and decorative elements—are rendered with fine detail, making the paintings more realistic and impactful. The use of colors is also highly symbolic: red represents love and energy, green signifies peace and nature, blue conveys depth, and gold symbolizes grandeur. The harmonious combination of these colors further enhances the overall beauty and appeal of the paintings.

जूना महल, डूंगरपुर की चित्रकला राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा, कलात्मक उत्कृष्टता और दार्शनिक दृष्टि का अद्वितीय उदाहरण है। यह महल केवल एक ऐतिहासिक भवन नहीं, बल्कि एक जीवंत कलादीर्घा है, जिसकी दीवारों पर अंकित भित्ति चित्र अतीत के जीवन, भावनाओं और सौंदर्यबोध को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। महल के भीतर विभिन्न प्रकार के चित्रों का समावेश है, जिनमें धार्मिक कथाएँ, राजसी जीवन, शिकार के दृश्य और प्रकृति के चित्रण के साथ-साथ श्रृंगार प्रधान चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पाँचवीं मंजिल पर स्थित ये श्रृंगारिक चित्र स्त्री-पुरुष संबंधों की सूक्ष्म, संतुलित और मर्यादित अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। इनमें प्रेम को केवल शारीरिक आकर्षण के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक गहराई, आत्मीयता और सौंदर्य के रूप में दर्शाया गया है। इनकी प्रेरणा भारतीय परंपरा में वर्णित 'काम' के सिद्धांत से जुड़ी है, जिसे जीवन के चार पुरुषार्थों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

कलात्मक दृष्टि से इन चित्रों की रेखाएँ अत्यंत कोमल, प्रवाहमयी और जीवंत हैं। चित्रों को छोटे-छोटे पैनलों में विभाजित किया गया है, जहाँ प्रत्येक पैनल एक स्वतंत्र दृश्य प्रस्तुत करता है, किंतु सभी मिलकर एक समग्र कथा का निर्माण करते हैं। पृष्ठभूमि में महल की वास्तुकला, झरोखे, पर्दे और सजावटी तत्वों का सूक्ष्म चित्रण चित्रों को अधिक यथार्थ और प्रभावशाली बनाता है। रंगों का प्रयोग भी अत्यंत प्रतीकात्मक है। लाल रंग प्रेम और ऊर्जा का, हरा शांति और प्रकृति का, नीला गहराई का और सुनहरा वैभव का प्रतीक है। इन रंगों का संतुलित संयोजन चित्रों की सौंदर्यता को और अधिक बढ़ाता है।

Keywords: Juna Mahal, Dungarpur; mural painting, Shringara Rasa, Rajasthani architecture, painting style, Kamasutra, male–female relationships, royal life.

जूना महल, डूंगरपुर, भित्ति चित्रकला, श्रृंगार रस, राजस्थानी स्थापत्य, चित्रकला शैली, कामसूत्र , स्त्री-पुरुष संबंध, राजसी जीवन

⁎ Corresponding author.

राजस्थान की धरती अपनी वीरता, स्थापत्य वैभव और समृद्ध कलात्मक परंपराओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध रही है। यहाँ के किले, महल, मंदिर और हवेलियाँ न केवल ऐतिहासिक घटनाओं के साक्षी हैं, बल्कि वे उस युग की सौंदर्य चेतना, सांस्कृतिक दृष्टि और कलात्मक उत्कृष्टता के भी परिचायक हैं। इन्हीं धरोहरों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है जूना महल का, जो डूंगरपुर नगर के मध्य स्थित एक भव्य और ऐतिहासिक महल है। यह महल अपने स्थापत्य के साथ-साथ अपनी अनूठी भित्ति चित्रकला के कारण विशेष रूप से चर्चित है। इसकी दीवारों पर अंकित चित्र केवल सजावट का माध्यम नहीं, बल्कि एक युग की संवेदनाओं, विचारों और जीवन-दर्शन का सजीव प्रतिबिंब हैं।

जूना महल का निर्माण मध्यकालीन कालखंड में प्रारंभ हुआ और समय-समय पर विभिन्न शासकों द्वारा इसमें विस्तार और अलंकरण किया गया। बाह्य रूप से यह महल एक सुदृढ़ दुर्ग के समान प्रतीत होता है—ऊँची दीवारें, मजबूत द्वार, संकरी खिड़कियाँ और सुरक्षात्मक संरचना इसकी रक्षात्मक उपयोगिता को दर्शाती हैं। किंतु इसके भीतर प्रवेश करते ही एक बिल्कुल भिन्न संसार का अनुभव होता है, जहाँ कठोरता के स्थान पर कोमलता, युद्ध के स्थान पर सौंदर्य और शक्ति के स्थान पर भावनाओं का संसार उपस्थित है।

महल के भीतर की दीवारें, छतें और कक्ष विविध प्रकार की चित्रकला से सुसज्जित हैं। इनमें धार्मिक कथाएँ, राजसी जीवन, युद्ध और शिकार के दृश्य, प्रकृति के चित्रण और विशेष रूप से श्रृंगार प्रधान दृश्य सम्मिलित हैं। यह विविधता जूना महल को एक जीवंत सांस्कृतिक दस्तावेज बनाती है।

विषय-वस्तु

इन चित्रों की प्रेरणा प्राचीन भारतीय ग्रंथ कामसूत्र से जुड़ी मानी जा सकती है, जिसमें 'काम' को जीवन के चार पुरुषार्थों में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस ग्रंथ में प्रेम और संबंधों को एक कला के रूप में देखा गया है, और जूना महल की चित्रकला इसी दृष्टिकोण को साकार करती प्रतीत होती है।

चित्रों में दर्शाई गई मुद्राएँ, भाव-भंगिमाएँ और शारीरिक संरचनाएँ अत्यंत स्वाभाविक हैं। कलाकारों ने मानवीय शरीर को केवल एक भौतिक रूप में नहीं, बल्कि भावनाओं के वाहक के रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार यह चित्रकला मानवीय अनुभवों की गहराई को अभिव्यक्त करती है।

Figure 1 जूना महल के जनाना महल के समरप्रयाण कक्ष में बनी अलमारी में बने कामसूत्र के विभिन्न आसन के बने भितिचित्र (कालक्रम 1909-18 ई.)

कलात्मक शैली

जूना महल की चित्रकला की एक प्रमुख विशेषता उसकी रेखाओं की कोमलता और प्रवाहमयता है। प्रत्येक आकृति में गति, संतुलन और जीवंतता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। कलाकारों ने सूक्ष्म रेखाओं के माध्यम से शरीर की बनावट, मुद्राओं और भावों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

चित्रों को छोटे-छोटे पैनलों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक पैनल एक स्वतंत्र दृश्य प्रस्तुत करता है, किंतु सभी मिलकर एक समग्र कथा का निर्माण करते हैं। यह संरचना दर्शक को क्रमिक अनुभव प्रदान करती है, जिससे वह प्रत्येक दृश्य का अलग-अलग आनंद ले सकता है और साथ ही सम्पूर्ण चित्रमाला का भी अनुभव कर सकता है।

पृष्ठभूमि में महल की वास्तुकला, झरोखे, पर्दे, उद्यान और सजावटी तत्वों का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण किया गया है। इससे चित्रों में गहराई और यथार्थता आती है। यह स्पष्ट करता है कि कलाकार केवल मुख्य विषय तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने सम्पूर्ण वातावरण को भी उतनी ही बारीकी से उकेरा है।

Figure 2 जुना महल के जनाना महल के समरप्रयाण कक्ष में बनी अलमारी

रंग योजना और प्रतीकात्मकता

जूना महल की चित्रकला में प्राकृतिक और खनिज रंगों का उपयोग किया गया है, जो आज भी अपनी चमक और आकर्षण बनाए हुए हैं। रंगों का चयन अत्यंत सोच-समझकर किया गया है, ताकि वे केवल दृश्य सौंदर्य ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और प्रतीकात्मक अर्थ भी व्यक्त कर सकें।

लाल रंग प्रेम, ऊर्जा और जीवन शक्ति का प्रतीक है, जो इन चित्रों में प्रमुखता से दिखाई देता है। हरा रंग शांति, संतुलन और प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि नीला रंग गहराई और स्थिरता का संकेत देता है। सुनहरे रंग का प्रयोग वैभव, ऐश्वर्य और दिव्यता को दर्शाने के लिए किया गया है।

इन रंगों का संतुलित और सामंजस्यपूर्ण उपयोग चित्रों को जीवंत और प्रभावशाली बनाता है। विशेष रूप से लाल रंग की प्रधानता शृंगार रस को और अधिक उभारती है।

सांस्कृतिक और दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

जूना महल की चित्रकला केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह भारतीय दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों का भी प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय परंपरा में 'काम' को जीवन के चार पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यहाँ 'काम' का अर्थ केवल शारीरिक सुख नहीं, बल्कि प्रेम, आनंद और सौंदर्य की अनुभूति है।

इन चित्रों में यह दार्शनिक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कलाकारों ने प्रेम को एक उच्च कोटि की कला के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें शरीर और आत्मा का संतुलन है। यह चित्र हमें यह सिखाते हैं कि प्रेम केवल बाहरी अनुभव नहीं, बल्कि एक आंतरिक अनुभूति है।

यह भी उल्लेखनीय है कि ये चित्र महल के निजी कक्षों में बनाए गए थे, जहाँ केवल शाही परिवार के सदस्य ही जा सकते थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह कला शासकों की व्यक्तिगत रुचि और उनके जीवन दृष्टिकोण का प्रतिबिंब थी।

तुलनात्मक अध्ययन

यदि जूना महल की चित्रकला की तुलना खजुराहो मंदिर से की जाए, तो दोनों में कई समानताएँ और भिन्नताएँ स्पष्ट होती हैं। खजुराहो की मूर्तियाँ जहाँ मंदिरों की बाहरी दीवारों पर सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित हैं, वहीं जूना महल की चित्रकला निजी कक्षों तक सीमित है।

खजुराहो में शिल्पकला प्रमुख है, जबकि जूना महल में चित्रकला। दोनों ही स्थानों पर शृंगार का चित्रण है, किंतु जूना महल में यह अधिक सूक्ष्म, संयत और भावनात्मक है। यह अंतर दोनों स्थलों की सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को भी दर्शाता है।

वर्तमान स्थिति और संरक्षण

समय के साथ जूना महल की चित्रकला पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नमी, धूल, पर्यावरणीय परिवर्तन और उपेक्षा के कारण कई चित्रों के रंग फीके पड़ गए हैं और उनकी स्पष्टता कम हो गई है। दीवारों में दरारें भी दिखाई देने लगी हैं, जो इस धरोहर के लिए गंभीर खतरा हैं।

इस स्थिति को देखते हुए संरक्षण की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से चित्रों की मरम्मत, उचित देखभाल, पर्यावरणीय नियंत्रण और जागरूकता अभियान इस दिशा में आवश्यक कदम हैं। साथ ही, इन चित्रों का दस्तावेजीकरण और शोध कार्य भी आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस धरोहर को समझ सकें।

आधुनिक संदर्भ में महत्त्व

आज के आधुनिक और व्यस्त जीवन में, जूना महल की चित्रकला हमें ठहरकर सोचने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करती है। यह हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है और यह समझने में सहायता करती है कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है।

यह चित्रकला हमें प्रेम, सौंदर्य और संवेदनाओं के महत्व को समझने की प्रेरणा देती है। यह हमें सिखाती है कि जीवन में संतुलन और सामंजस्य बनाए रखना कितना आवश्यक है।मनुष्य केवल शारीरिक, भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र नहीं वरन मानव मानसिक एवं आत्मिक सुखों का भी प्रमुख स्त्रोत है।

निष्कर्ष

जूना महल की चित्रकला वास्तव में एक मौन काव्य है, जो रंगों और रेखाओं के माध्यम से अपनी बात कहती है। यह केवल एक कला रूप नहीं, बल्कि एक अनुभव है, जो हमें अतीत से जोड़ता है और वर्तमान को समझने में सहायता करता है।

यह धरोहर हमें यह सिखाती है कि कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन को समझने और उसे बेहतर बनाने का माध्यम भी है। अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस अमूल्य विरासत का संरक्षण करें और इसे आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप से पहुँचाएँ।

अंततः, जूना महल भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन का एक अद्वितीय प्रतीक है, जहाँ शृंगार, सौंदर्य और जीवन का उत्सव एक साथ अभिव्यक्त होता है।

संदर्भ:

1. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
2. महेश पुरोहित, डूंगरपुर (राजस्थान) द्वारा लिखित "हिस्ट्री ऑफ जूना महल" पर आधारित
3. https://www.remoteasiaphoto.com/photo/juna-mahal-erotic-paintings-cupboard/
4. मल्लिका बोहरा - डूंगरपुर राज्य की भित्ति चित्रांकन परम्परा समाज एवं सांस्कृति प्रतिभा प्रशाशन, नई दिल्ली-2009,
5. डॉ. आर के वशिष्ठ: मेवाड की चित्राळूज परम्परा
6. डॉ. निर्मला जैन, रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र